कन्नड़ का उपन्यास साहित्य : संक्षिप्त दृष्टिक्षेप

डॉ.तस्लीमा

शोध सार :

भारत देश अनेक प्रकार की विविधताओं का एक अपूर्व संगम देश है। यह विविधता ही हमारे संस्कृति के विकास के ध्योतक है। एक इंद्रधनुष में एक साथ कई रंग दिखायी पड़ते हैं, एक बगीचे में एक साथ अनेक रंगों के फूल खिलते हैं। उसी प्रकार हमारे देश में कई भाषाएँ पलती पनपति आयी है। इसमें से कुछ भाषाएँ विकसित होकर जनमानस की भाषा बन गई तो कुछ भाषाएँ काल के गर्त में समान गई। इन सारी भाषाओं की अपनी-अपने साहित्यिक विरासत, परंपरा, इतिहास और पहचान है ।ऐसे ही एक समृद्ध भाषा है कन्नड़।

बीज शब्द : कन्नड़ साहित्य, उपन्यास, द्रविड़ भाषा परिवार, कन्नड़ भाषा, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कर्नाटक एक प्रसिद्ध राज्य है । कर्नाटक की भाषा कन्नड़ है। कन्नड द्रविड़ परिवार की एक प्रमुख भाषा है। यह भारतीय संविधान के अनुसूचित भाषा है। कन्नड़ और संस्कृत का संबंध बहुत पुराना है। कन्नड़ साहित्य का इतिहास 9वीं सदी 'कविराजमार्ग' नामक ग्रंथ से प्रारंभ होता है। इस ग्रंथ में कर्नाटक, कन्नड़ भाषा, साहित्यिक गतिविधि आदि का परिचय दिया गया है। इस श्रेष्ठ ग्रंथ को कवियों के लिए राजमार्ग बताने वाला आकार ग्रंथ कहा गया है।

कन्नड़ उपन्यास साहित्य विकसित एवं लोकप्रिय विधा है । नवोदय, प्रगतिशील, नव्य और बंडाय पंथ के लेखकों ने इस विधा को सर्वोत्तम बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। कन्नड़ के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता लेखक कुवेंपु, शिवराम कारंत, मास्ती वेंकटेशा अय्यंगार, यू.आर.अनंतमूर्ति. अ.न कृष्णाराव, ता.रा.सु, राव बहादुर निरंजन,एस.एल.भैरप्पा, देवनूर महादेव आदि साहित्यकारों ने उपन्यास विधा में उल्लेखनीय रचना करके विश्व के सम्मुख कन्नड़ साहित्य के नए प्रतिमान स्थापित किया है। इन साहित्यकारों ने अपने रचना द्वारा युगीन समस्याओं का पर्दाफाश किया है।

'कन्नड़ के आस्ती' (खजाना) कहलानेवाले मास्ती वेंकटेश अय्यंगार कन्नड़ साहित्य के एक प्रमुख उपन्यासकार के नाम से अधिक जाने जाते हैं। वे 'श्रीनिवास' नाम से उपन्यास लिखते थे। चिंतनशील व स्वच्छंदतावादी लेखक मास्ती ने अपने लेखन में मूलभूत मानव मूल्यों के प्रतिष्ठापन की। उन्होंने 'चिक्कवीर राजेंद्र' और 'चेन्नबसवनायक' नामक दो श्रेष्ठ उपन्यास की रचना की है। इन दो उपन्यासों में ऐतिहासिक व्यक्तियों के जीवन और तत्कालीन सामाजिक - राजनीतिक जीवन का गंभीर चित्रण प्रस्तुत किया है। 'चिक्कवीर राजेंद्र' का हिंदी रूपांतरण

है 'छोटा राजा'। यह उपन्यास मैसूर के निकट एक छोटे से प्रदेश कोडागु राज्य के अंतिम शासक की कहानी है। यह उपन्यास शासक के विनाश की कथा ही नहीं है बल्कि मानव समाज की निरीहता का भी कहानी है

कन्नड़ साहित्य के 'प्रेमचंद' कहलानेवाले शिवराम कारंत एक चिंतनापरख उपन्यासकार है । वे शुरुआत की दौर में साल में एक बार उपन्यास रचना किया करते थे। इनका प्रसिद्ध उपन्यासों का नाम इस प्रकार है - चोमन दुडी, मूकज्जिय कनसुगलु, दोड्डवरा दोडुस्तिके,नष्ट दिग्गज, धर्मारायन संसार । इसमें 'चोमन दुडी' कन्नड़ का गोदान है । मूकज्जिय कनसुगलु उपन्यास को ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है । कारंत के हर एक उपन्यास में चिंतनापरख एवं वैचारिकता के साथ-साथ पाठकों को एक नया आलोक प्राप्त करता है ।

' अ.न.कृ' नाम से प्रसिद्ध अरकलगूड़ू नरसिंगाराव कृष्णाराव ने कन्नड़ साहित्य में सौ से ज्यादा उपन्यास लिखे है। उन्होंने उपन्यास विधा को समाज परख बनाकर अपने समाज के तमाम समस्याओं का चित्रण करके लोगों को सचेत करने के साथ ही बड़े पाठक समूह भी तैयार किया है। इनके दृष्टि इतिहास पर केंद्रित होने के कारण ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे हैं। जिनके सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासों का नाम इस प्रकार है - कलंकिनी ,कामिनी कांचाना,बन्नद बदुकु ,नट सर्वभौम, नग्न सत्य, शनि संतान, संजे गत्तलु आदी। प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का गंभीर विश्लेषण और राजनीतिक क्षेत्र की समस्त विद्रूपताओं का चित्रण किया है।।उनके उपन्यास में अश्लीलता का ज्यादा प्रयोग करने के कारण उनकी कटु आलोचना की गयी थी ।इस संबंध इनका कहना है की - "यदि सच बोलना अश्लील है तो मै एक अश्लील लेखक हूँ । यदि सड़क पर किसी गरीब दलित असहाय नग्न महिला अश्लील है, तो मै भी एक अश्लील लेखक हूँ"।

रावबहादुर कन्नड़ साहित्य के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं ।जिन्होंने गाँव के विविधतापूर्ण जीवन का समग्र चित्रण अपने उपन्यास 'ग्रामायण' में किया है । यह कन्नड़ के कलात्मक उपन्यास है। 'तब्बलिगलु' उनका अंतिम उपन्यास है जिसमें स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक क्षेत्र की सच्चाईयों को उजागर किया गया है। अर्थात उन्होंने अपने ज्यादातर उपन्यासों में राजनीतिक क्षेत्र की भ्रष्टता राजनीतिक नेताओं के मुखौटों को पर्दाफाश किया है ।

'चदुरंग' नाम से विख्यात लेखक एम. सुब्रह्मण्य राजे अरस कन्नड़ साहित्य का पहली पीढी के सशक्त उपन्यासकार है । इन्होंने केवल चार उपन्यासों की रचना की है परंतु यह काफी चर्चित एवं लोकप्रिय है।उपन्यासों का नाम इस प्रकार है - 'सर्वमंगला' ,'उय्याले', 'हैज्जाला' आदि। इन चार उपन्यासों का स्थायी भाव प्रेम है, जिसके चारों ओर विभिन्न स्तरों पर होने वाली समस्याओं के बहुआयामी में रूपों का लेखक ने यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

यू. आर. अनंतमूर्ति नाम से सुप्रसिद्ध उडुपी राजगोपालाचार्य अनंतमूर्ति कन्नड़ के अत्यंत चर्चित राष्ट्रीय स्तर के लोकप्रिय उपन्यासकार हैं ।इन्हें कन्नड़ साहित्य नव्य आंदोलन का प्रणेता माना जाता है। जिनके द्वारा रचित 'संस्कार', 'भारतीपु'र,'भव' और 'दिव्या' नामक उपन्यासों ने कन्नड़ साहित्य को नयी दिशा दी। इन उपन्यासों में धर्म,हरिजनों की समस्या और राजनीतिक क्षेत्र की विडंबनाओं का चित्रण है।

'संस्कार' उपन्यास में इन्होंने ब्राह्मणवादी मूल्यों और वर्ग आधारित व्यवस्था को कटु विरोध किया है । इस उपन्यास के लिए लेखक अनंतमूर्ति को अपने समुदाय के तीव्र विरोध को भी सामना करना पड़ा । अपने यथार्थ लेखन कार्य के कारण जीवनपर्यंत अनेक कटु आलोचना को भी सहन करना पड़ा।'भारतीपुर' उपन्यास में एक भारतीय युव समाज सुधारक की कथा है। 'भव' उपन्यास में उन्होंने आधुनिक सभ्य समाज के विद्रूपताओं का दर्शाया है।

एस .एल भैरप्पा नाम से प्रसिद्ध संतेशिवरा लिंगन्नैया भैरप्पा जी ने कन्नड़ साहित्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया है। इनका उपन्यासों में धर्म, प्रेम ,दर्शण, राजनीति, भारतीय संस्कृति, पौराणिक आख्याण तथा सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण गंभीरता से किया गया है। भैरप्पा के प्रमुख उपन्यासों का नाम इस प्रकार है 'वंशीवृक्ष'दूरसरिदरु',गृहभंग,दादू,अंचु, नेले, पर्व, साक्षी और मंद्रा । 'नेले' उपन्यास मृत्यु और काम की अनिवार्यता के बीच जीवन के गुढार्थों का अन्वेषण किया है ।'पर्व' भैरप्पा के उपन्यासों में ही श्रेष्ठ माना जाता है। साथ ही यह उपन्यास कन्नड़ साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भी है।इस उपन्यास में महाभारत के कथानक के आधार पर रचना किया गया है। महाभारत के पात्रों को यहां अत्यंत मानवीय धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास की शैली आत्मकथात्मक है। इस उपन्यास का हर एक पत्र आत्म मंथन द्वारा बीती गई घटनाओं को ऐसे पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत करते जाता है कि उनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम अनावृत करता है। इन्होंने इस उपन्यास में महाभारत के कथानक को आधुनिक के संदर्भ में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। उपन्यासकार इस उपन्यास में सरल भाषा और आकर्षक निरूपण शैली को अपनाया है।

नई पीढ़ी के अनेक युवा लेखक उपन्यास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिनमें से दो प्रमुख लेखकों का नाम उल्लेखनीय है। श्रीकृष्णा आलनहल्ली कन्नड़ के युवा लेखकों में से सर्वाधिक चर्चित उपन्यासकार है ।उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण वा नगरीय जीवन के प्रभाव से ग्रामीण जीवन में होने वाले परिवर्तन का भी चित्रण है।उनके प्रसिद्ध उपन्यासों का नाम इस प्रकार है - 'काडु','परसंगद गेंडेतिम्मा' और 'भुजंगय्यन दशावतारागलु' आदी।

देवनूर महादेव कन्नड़ के सुप्रसिद्ध दलित लेखक है ।उन्हें कर्नाटक दलित संघर्ष समिती के प्रणेता माना जाता है। उन्होंने 'ओडलाला' और 'कुसुमबाले' उपन्यास में दलित समाज के संवेदनाओं एवं उनकी पीड़ावों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है ।उनके उपन्यास अन्य उपन्यासों से भिन्न है क्योंकि उन्होंने बड़ी सहज एवं शांति रीति से दलितों के यातानाओं को निरूपण और अनावरण भी किया है ।

कन्नड़ उपन्यास लेखिकाओं की संख्या भी अधिक है ।उनमें त्रिवेणी,उषा नवरत्नराम,एम .के इंदिरा ,अनुपमा निरंजन,ललितांबा चंद्रशेखर ,के.शंतामणि का नाम उल्लेखनीय है ।अत्यंत सूक्ष्म संवेदनाओं से उपन्यास लेखन लिखने में सारा अबूबक्कर प्रमुख है । उन्होंने केरल और मंगलूरु के रहनेवाले मुस्लिम को केंद्रित करके उपन्यासों की रचना की है ।उन्होंने अपने लेखन में पितृसत्तात्मक समाज का कटु आलोचना की है। अपने लेखन शैली के बारे में वे स्वंय कहती है की - वह साहित्य के लिए यथार्थवादी दृष्टिकोण पसंद करती है ,शैलिगत अलंकरणों पर सामाजिक चिंताओं की अभिव्यक्ती को प्राथमिकता देती है । सारा अबूबक्कर ने 'चंद्रगिरिय तीरदल्ली' नामक प्रथम उपन्यास की रचना किया। इस उपन्यास की प्रसिद्धता के कारण अंग्रेजी और मराठी में भी अनुवाद हुआ है।उनके प्रसिद्ध उपन्यासों का नाम इस प्रकार है - 'सहना','कदन विरामा' ,'वज्रगलु', 'सुलियल्ली सिक्वावरु','पंजरा' आदि।'चंद्रगिरिय तीरदल्ली' नामक उपन्यास नादिरा नामक की युव मुस्लिम महिला के जीवन पर केंद्रित है ।उनके दूसरे प्रसिद्ध उपन्यास वज्रगलु है। इस उपन्यास में नफीस पात्र के माध्यम से कासरगोड के मुस्लिम सामुदाय के विवाह संबंधी धारणाएं या तलाक संबंधी विचारों पर प्रकाश डाला गया है ।उनके संपूर्ण उपन्यासों में वैवाहिक बलात्कार, सांप्रदायिक और धार्मिक हिंसा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गूँज है।

निष्कर्ष :

भारत अनेक भाषाओं का अपूर्व संगम स्थान है। इस देश की एक वरदान यह भी है कि अनेक भाषाओं के समृद्ध साहित्य एक ही साथ मिलता है। सभी भाषाओं के साहित्य संयोजन के अभाव के कारण प्रथम दृष्टि में ऐसा प्रतीत होता है कि सभी भाषाओं के साहित्य अलग-अलग है। किंतु इन भिन्न भाषओं के साहित्य मिलकर ही भारतीय साहित्य का एक विशिष्ट स्वरूप प्रस्तुत होता है। जिस प्रकार एक पेड़ में अनेक टहानियाँ दिखाई पड़ेगी,इन टहनियों के आकार में भिन्नता जरूर होगी, किंतु सारी टहनियाँ एक ही तने में पैदा होती है ।अर्थात पेड़ के मुख्य जड़ एक ही होते हैं। उसी प्रकार हमारे देश की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य की विचाराधारा या संस्कृति एक ही है ।

<u>सहायक ग्रंथ सूची</u>

1. भारतीय साहित्य आशा और आस्था - डॉ.आरसु ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,दरियागंज ,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2011
2. भारतीय साहित्य की पहचान -डॉ.सियाराम तिवारी ,वाणी प्रकाशण ,दरियागंज , नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण, 2015
3. कन्नड़ की प्रतिनिधि कहानियाँ -श्री मे. राजाश्वेरय्या ,दक्षिण भारत प्रचार सभा,मद्रास, प्रथम संस्करण, 1971

प्राध्यापिका, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूरू
Email: tasleemaucm22@gmail.com